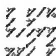
श्री पुण्य श्रीजी स्मारक ग्रंथमाला पुष्प नं० १६

॥ अर्हं नमः ॥

❀ जिनेश्वर सुबोधदिम ❀

ज्ञान-पञ्चमी-सुव्रत-विधि



सम्पादिका

पूज्य वर्या–खरतरगच्छीयार्या शिरोमणि प्रवर्तिनी–

श्री श्री १०८ श्रीमती ज्ञानश्रीजी महाराज की

अन्तेवासिनी

साध्वी सज्जनश्री

प्रकाशिका

स्वर्गीय जौहरी श्रीयुत इन्द्रचन्दजी सा० झरगड की

धर्मपत्नी श्रीमती शिरसूबाई

वीर सं० २४७ } प्र० सं० १ { विक्रम सं० २००५

विषय-सूची



❀ वक्तव्य ❀

चराचर संसार छह द्रव्यों से बना हुआ है। धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल ये पांच द्रव्य अचेतन हैं। जीवास्तिकाय सचेतन द्रव्य है। अवस्था भेद से यही जीवास्तिकाय द्रव्य संसार मूल-जीव बहिरात्मा एवं परमात्मा आदि नामों से जाना जाता है। अपनी ही अशुद्ध प्रक्रियाजन्य आठ कर्मों की संतान परंपरा से बंधा हुआ आत्मा संसार में भटकता हुआ संसारी कहा जाता है और सद्गुरुका प्रेरणा से या स्वभाव से अनुकूल कालादि निमित्तों को पाकर अपनी शुद्ध प्रक्रिया से कर्मों को काटकर बन्धन मुक्त होता हुआ वही आत्मा परमात्मा बन जाता है। इस प्रकार संसार आत्मा भी अनंत हैं और संसार मुक्त परमात्मा भी अनन्त हैं।

आत्मा का प्रधान गुण जगत उपयोग है। सामान्य उपयोग दर्शन और विशेष उपयोग ज्ञान कहा जाता है। इस दृष्टि से ज्ञान आत्मा का प्रधान गुण है। निगोद की निकृष्टतम अवस्था में भी अक्षर का अनंतवां भाग ज्ञान रूप में मौजूद होता है। वही ज्ञान अनुकूल कालादि कारणों को पाकर परमात्मा की उत्कृष्टतम अवस्था में पूर्ण केवल ज्ञान रूप से विकसित हो जाता है।

ज्ञान गुण को ढकनेवाले कर्म को ज्ञानावरणीय कहते हैं। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान और मनःपर्याय ज्ञान रूप से विकास होता है एवं क्षायिक भाव से केवल ज्ञान का प्रकाश पैदा होता है। कर्म का आवरण पुरुषार्थ से हटता है। अनुकूल द्रव्य क्षेत्र काल और भाव में किया हुआ पुरुषार्थ सफल होता है। इसलिये उन चारों का ध्यान रखना चाहिये। इस कार्य साधक पवित्र काल को पर्व कहते हैं। पर्व में की हुई थोड़ी भी क्रिया समय पर की हुई खेती के समान महान् फल को देती है।

वरदत्त गुणमंजरी के जैसे ज्ञान की एवं ज्ञानीकी आशातना करने से दिमाग विस्मरणशील रोगी रहता है। आराधना से प्रशस्त एवं प्रसन्न रहता है प्रत्येक शुक्ल पक्ष की पंचमी ज्ञानाराधन की प्रधान तिथि

मानी जाती है। कार्तिक शुक्ला पंचमी का विशेष माहात्म्य है। उस रोज जीवन की जरूरतों को कम करने के लिए उपवास-व्रत करना चाहिये। अधिक गुणी गुरुओं के साथ ज्ञान चर्चा करनी चाहिये। गुरुओं द्वारा लिपिबद्ध साहित्य को पढ़ने की अभिरुचि रखते हुए उभय भाव से पूजा करना चाहिये। पूज्य की सविधि पूजा योग्य पुजारी को भी पूज्य बना देता है।

ज्ञान पंचमी सुव्रत विधि का संग्रह पूज्या गुरुवर्या श्रीमती प्रवर्तिनी जी महाराज साहिबा के सदनुग्रह से संपन्न हुआ है। श्री पुण्यश्री जी स्मारक ग्रन्थमाला के सोलहवें पुष्प रूप में इसका प्रकाशन जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी स्वर्गीय श्रीमान् इन्द्रचन्द्रजी साहब फरगद की धर्मपत्नी एवं श्री सुमतचन्द्रजी की माताजी शिखरबाई जी ने किया है जो धन्यवाद के पात्र हैं। पाठकगण इससे लाभ उठावें।

निवेदिका

सज्जनश्री



॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥

ज्ञानदायि-सद्गुरुभ्यो नमो नमः

ज्ञान-पञ्चमी-व्रत-विधि

(मंगल)

अनन्त धर्मात्मक-वस्तु-तत्त्व,
प्रकाशयद् भानुरिवेह यत्सत् ।
भिनत्ति दुर्बोध-तम समस्त,
नमामि तज्ज्ञानमहं श्रियेस्तात् ॥

(उपेन्द्रवज्रा)

स्थापना-विधि

कार्तिक शुक्ला ५ के दिन शुभ घड़ी में 'ज्ञान मंदिर' उपाश्रय धर्मशाला अथवा पवित्र मनोहर एकान्त निरुपद्रव स्थान को धूपादि से सुवासित कर, चन्द्रवा पूठिया आदि से अलङ्कृत कर, पट्टों पर पुस्तकें पूठे प्रमुख स्थापन करे । शुद्ध ताजा घृत का अखंड दीपक रक्खें धूप अगरबत्ती कपूर आदि खेवे ।

पूजा विधि

अखण्ड उज्ज्वल चावलों के पांच स्वस्तिक करे । ताजे फल पुष्प नैवेद्य चढ़ावे । पांच बत्ती का दीपक करे ।

ज्ञान पूजा गाथाएँ

नमति सामन्त सद्दीवनाइ देवाय पूये सुविवेय पुव्वि ।
मत्तीय चित्तं मणिदामएहिं मदार पुप्फ पसवेहि नाग ॥१॥
तहेव सड्ढा मणि सुचिएहिं-सुगंध पुप्फेहि वरसिएहि ।
पूयंति वदति नमंति नाण,नाणस्स लाभाय भवक्खयाय ॥२॥

ये गाथाएँ बोलकर वासक्षेप स ज्ञान पूजा करे । यथाशक्ति रोकड़ी चढ़ावे । पुस्तक पूठा कागज कलम होल्डर पाटी पेन्सिल आदि चढ़ावे । खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमे । एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । मुहपत्ति पडिलहण कर दो वाँदणा देवे । फिर पांच खमासमण देकर चैत्यवन्दन करे —

❀ चैत्यवन्दन ❀

सकलवस्तु प्रतिभास भानु, निर्मलसुखकारण ।
सम्यगदर्शन पुष्टहेतु, भवजल निधि तारण ॥
मयण तप आनन्द कन्द अन्नाण निवारण ।
मार–विकार–प्रचार–ताप–तापित–जन तारण ॥ १ ॥

स्याद्वाद परिणाम धर्मपरिणति पडिबोहण ।
साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥
मोहतिमिर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण ।
आतम शक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ २ ॥

मति श्रुत अवधि विशुद्ध नाण मण पज्जव केवल ।
भेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायक निरमल ॥
दोय परोक्ष प्रथम तिहाँ, दुग परतक्ष दीसत ।
सकल प्रत्यक्ष प्रकाश मास, ध्रुव केवल अपरिमित ॥ ३ ॥

धर्म सकल ना मूल शुद्ध-त्रिपदी जिन भाखे ।
बाहिर अङ्ग प्रधान स्कन्ध गणधर सुप्रकाशे ॥
शाखा श्री निर्युक्ति भाष्य पडिसाखा दीपे ।
चूर्णि टीका पत्र पुष्प संशय सब जापे ॥ ४ ॥

पञ्चाङ्गी सार बोध कह्यो जिन पञ्चम अङ्गे ।
नन्दी अनुयोग द्वार साख मानो मनरङ्गे ॥
वीर परम्पर जीत एह, अनुभव उपगारी ।
अभ्यासो आगम अगम, निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥

मोहपङ्क हर नीर सम, सिद्धांत अथाहे ।
देवचन्द्र आणा सहित नय-भङ्ग वगाहे ॥
ए श्रुत ज्ञान सोहामणो, सकल मोक्ष सुखकन्द ।
भगते सवो भविक जन, पामो परमानन्द ॥ ६ ॥

फिर नमुत्थुणं० जावंति चेइआइं० जावंति केवि साहू० नमोऽर्हत्सिद्धा० कह कर स्तवन कहे :—

—: स्तवन :—

ढाल पहली

प्रणमूं श्री गुरुपाय, निर्मल ज्ञान उपाय,
पञ्चमी तप भणू ए, जन्म सफल गिणू ए ॥१॥
चउवीसमो जिनचन्द, केवल ज्ञान दिनन्द,
त्रिगड़े गह गहोए, भवियण ने कहाए ॥ २ ॥
ज्ञान वड़ो संसार, ज्ञान मुगति दातार,
ज्ञान दीवो कहो ए, सांचो सद्दहो ए ॥ ३ ॥
ज्ञान लोचन सुविलास, लोका लोक प्रकाश,
ज्ञान बिना पशु ए, नर जाणे किस्यु ए ॥ ४ ॥
अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण,
ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥
ज्ञानी स्वासोसास, कर्म करे ज नास,
नारकी ना सही ए, क्रोड वरस कही ए ॥ ६ ॥
ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार,
किरिया छे सही ए, पिण पाछे कही ए ॥ ७ ॥
किरियासहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान,
सोनो ने सुरो ए, शङ्ख दूधे भर्यो ए ॥ ८ ॥
महा-निशीथ मझार, पचमी अक्षरसार,
भगवत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥ ६ ॥

ढाल दूसरी

पञ्चमी तप विधि साँभलो, जिम पामो भवपारो रे ।
श्री अरिहंत इम उपदिशे, भवियण ने हितकारी रे । प०॥
मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ़ वैशाखो रे ।
इण षटमासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु साख्यो रे ॥प०॥
देव जुहारी देहरे गीतारथ गुरु वन्दी रे ।
पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति हुव ता नन्दी रे ॥प०॥
बेकर जोड़ी भाव सूँ, गुरु मुख करो उपवासो रे ।
पचमी पड़िकमणो करो, पढ़ा पण्डित गुरु पासो रे ॥प०॥
जिण दिन पचमी तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ।
पचमी स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचारिज पिण पालो रे ॥प०॥
पाच मास लघु पञ्चमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे ।
पाँच बरस पाँच मासनी, पञ्चमी करो शुभ दृष्टी रे ॥प०॥

ढाल तीसरी

हिव भवियण रे पञ्चमी ऊजमणो सुणो,
घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ।
ए अवसर रे आवतां वलि दोहिलो,
पुण्य जोगे रे धन पामतां सोहिलो ॥१॥

उल्लालो

सोहिलो वलिय धन पामतां पिण धर्म काज न्हिर्रा वली,
पचमी दिन गुरु पास आवी कीजिए काउसग्ग रली।

अथ ज्ञान दरशन चरण टीकी देई पुस्तक पूजिये,
स्थापना पहिली पूज करत सुगुरु सेवा कीजिये ॥ १ ॥

सिद्धान्तनी र पाँच प्रति वींटांगणा,
पान पूठाँ र मखमल सूत प्रमुख वणा ।
बाँध दोरा रे लखण पाँच मञ्जोसणा,
वाम कूँपा र काबी चारू चतरणा ॥

उल्लालो

चतरणा चाक वलिय फँवली पांच भिलमिल अति भली,
स्थापनाचार्जि पांच ठवणा मुँहपती पड पाटली ॥
पट सूत्र पाटी पच कोथलि पच नवकरवालियाँ,
इण पर श्रावक करे पंचमी उजमणु उजवालियां ॥२॥
वलि देहरे रे स्नान महोत्सव कीजिये,
घर सारू रे दान वली तिहां दीजिये ।
प्रतिमा ने रे आगल ढोवणु ढोइये,
पूजाना रे जे जे उपगरण जोइये ॥

उल्लालो

जोइय उपगरण देवपूजा काज कलश भृङ्गार ए,
आरती मङ्गल थाल दीवो धूप धाणु सार ए ।
घन सार केशर अगर सुखड अङ्गलूहणु दीप ए,
पंच पच सघली वस्तु ढोवी सगति सू पचवीस ए ॥३॥

पचमी ता रे महिमा सर्वे जिमाड़िये,
राति जोगे रे गीत रसाल गवाड़िये।
इण करणी रे करतां ज्ञान आराधिये,
ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधिये ॥

उल्लालो

साधिये मारग एह करणी ज्ञान लहिये निरमलो,
सुरलोक ने नर लोक माँहा ज्ञानवन्त ते आगलो।
अनुक्रमे केवल ज्ञानपामी सास्वता सुख जे लहे,
जे करे पचमी तप अनुपम एहवं वीर जिनवर इम कहे ॥४॥

कलश

इम पचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिनेसरो,
मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल बल अलवेसरो।
जयवंत श्री जिनचन्द्र सुरि ज सकल चन्द्र नमंसियो,
वाचनाचारिज समयसुन्दर भगति भाव प्रशंसियो ॥५॥

बाद जयवीयराय० अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ० एक नवकार का कायोत्सर्ग करे नमोऽर्हत्० कह कर स्तुति कहे—

देविंद वंदिय पयेहिं परूविया सि,
नाणाणि केवल मणाहि मइ सुयाणि।
पचामि पचम गई सिय पंचमीए,
गुण रयाण जियाण दिंतु ॥१॥

फिर ज्ञान आराधना निमित्तं करेमि काउसग्ग कहकर तस्सुत्तरी० अन्नत्थ कहे एक लागस्स का कायोत्सग करके स्तुति कहे—

बोधागाध सुपद-पदवी नीर पूराभिराम
जीवाहिंसा विरल लहरी सङ्गमागाह-देहम् ।
चूलावेल गुरु-गम मणी-सङ्कुल दूर-पार,
सार वीरागम जलनिधि सादर साधु सेवे ॥१॥

पाछे निम्न गाथा कहे—

आभिणिबोहिय नाणं, सुयनाणं चेव ओहीनाणं च ।
तह मणपज्जवनाणं, केवल नाणं च पञ्चमयं ॥१॥

तत्पश्चात् इच्छामि खमासमणो० कह कर निम्नलिखित पांच तथा स्थिरता होतो इक्यावन नमस्कार करे—

पाँच नमस्कार —

१ श्री मतिज्ञानाय नमः । २ श्री श्रुतज्ञानाय नमः ।
३ श्री अवधिज्ञानाय नमः । ४ श्री मन पर्यवज्ञानाय नमः
५ श्री केवलज्ञानाय नमः ।

इक्यावन नमस्कार —

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
२ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,, नमः ।
३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,, नमः ।
४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,, नमः ।

५ स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम ।
६ रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह	,,	नम ।
७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह	,,	नम ।
८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह	,,	नम ।
९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह	,,	नम ।
१० मनोऽर्थावग्रह	,,	नम ।
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा	,,	नम ।
१२ रसनेन्द्रिय ईहा	,,	नम ।
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा	,,	नम ।
१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा	,,	नम ।
१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा	,,	नम ।
१६ मन ईहा	,,	नम ।
१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय	,,	नम ।
१८ रसनेन्द्रिय अपाय	,,	नम ।
१९ घ्राणेन्द्रिय अपाय	,,	नम ।
२० चक्षुरिन्द्रिय अपाय	,,	नम ।
२१ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय	,,	नम ।
२२ मनोऽपाय	,,	नम ।
२३ स्पर्शनेन्द्रिय धारणा	,,	नम ।
२४ रसनेन्द्रिय धारणा	,,	नम ।
२५ घ्राणेन्द्रिय धारणा	,,	नम ।
२६ चक्षुरिन्द्रिय धारणा	,,	नम ।
२७ श्रोत्रेन्द्रिय धारणा	,,	नम ।

२८ मनो धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३० अनक्षर „ नमः ।
३१ संज्ञि „ नमः ।
३२ असंज्ञि „ नमः ।
३३ सम्यक् „ नमः ।
३४ मिथ्या „ नमः ।
३५ सादि „ नमः ।
३६ अनादि „ नमः ।
३७ सपर्यवसित „ नमः ।
३८ अपर्यवसित „ नमः ।
३९ गमिक „ नमः ।
४० अगमिक „ नमः ।
४१ अङ्गप्रविष्ट „ नमः ।
४२ अनङ्गप्रविष्ट „ नमः ।
४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।
४४ अननुगामि „ नमः ।
४५ वर्द्धमान „ नमः ।
४६ हीयमान „ नमः ।
४७ प्रतिपाति „ नमः ।
४८ अप्रतिपाति „ नमः ।
४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।
• विपुलमति „ नमः ।

५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः ।

पश्चात् स्थिरता हो तो ५१ लोगस्स का कायोत्सर्ग करे । नहीं तो ५ लोगस्स का कायोत्सर्ग करे । पार कर प्रगट लोगस्स कहे । "ॐ ह्रीँ नमोनाणस्स" इस पद की २० माला गुणे । धैर्य हो तो ग्यारह अङ्ग की सज्झाय पढ़े ।

ग्यारह अङ्ग की सज्झायें

प्रथम आचाराङ्ग सज्झाय

(राग—हठीला की)

पहिलो अङ्ग सुहामणो रे लाल,
अनुपम आचारांग रे । सुगुणनर ॥
वीर जिनंद वखाणियो रे लाल,
उनवाई जाम उमाग रे ॥ सु० ॥ १ ॥
बलिहारी एह अङ्गनी रे लाल,
हूँ जाऊ वारवार रे ॥ सु० ॥
विनय गोचरी आदर लाल,
जिहाँ साधु तणा आचार रे ॥ सु० ॥ ब० ॥२॥
सुयखन्ध दोयछे जेहना रे,
प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥
उद्देशादिक जाणिये रे लाल,
पच्चाशी सुजगीश रे ॥ सु० ॥ ब० ॥ २ ॥
हेतु-जुगति कर शोभता रे,
[illegible] हजार रे ॥ सु० ॥

अक्षर पद ने ऊंहड रे लाल,
संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ४ ॥
गमा अनन्ता जहमा रे,
वलि अनन्त पर्याय रे ॥ सु० ॥
त्रस परित्त तो छे इहां रे लाल
थावर अनन्त कहाय रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ५ ॥
निबद्ध निकाचित सास्वता रे,
जिन प्रणीत ए भाव रे ॥ सु० ॥
सुणता आतम उल्लसे रे लाल,
प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ६ ॥
सुगुण श्रावक चार श्राविका रे,
अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥
विधि पूर्वक तुम सामलो रे लाल,
गीतारथ गुरू पास रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ७ ॥
ए सिद्धान्त महिमा निलो रे,
उतारे भव पार रे ॥ सु० ॥
जिनयचन्द्र कहे माहरे रे लाल,
ए हिज अङ्ग आधार रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥

द्वितीय सूत्रकृताङ्ग सज्झाय

(राग—रसिया की)

बीजो रे अङ्ग तुमे साभला,
मनोहर श्री सुयगडाग ॥ मोरा साजन ॥

गणमे प्रगट पायएटी तणो,
मन रागइ्या धर रंग ॥ मोरा० ॥ १ ॥
मीठी र लाग वाणी जिन तणी,
नागे जेहथी रे ज्ञान ॥ मोरा० ॥
ए वाणी मल मणी माहर,
भानु गुरा ने ममान ॥ मोरा० ॥ मी० ॥ २ ॥
गयपसेणी उपाग छे जेहनो,
ए तो सूत्र गभीर ॥ मोरा ॥
चउश्रु त अर्थ जाणे सहु,
क्षीर नीर जनु नीर ॥ मोरा० ॥ मी ॥ ३ ॥
जहना रे सुयखन्ध होय छ,
वलि अध्ययन तेत्रीस ॥ मोरा० ॥
उद्देशा समुद्देशा निहा भला,
सज्झायें र तेत्रीस ॥ मोरा० ॥ मी० ॥ ४ ॥
नय निक्षेप प्रमाण भर्या,
पद छत्तीस हजार ॥ मोरा० ॥
सख्याता अक्षर पद मांहि,
गुण लहे तहनो रे पार ॥ मोरा ॥ मी ॥५॥
गमा अनन्ता पर्याय वलि,
भेद अनन्त जिण माहि ॥ मोरा० ॥
गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या,
थावर अनन्त जेह माहि ॥ मोरा ॥ मी ॥ ६ ॥

निबद्ध निकाचित न मामयकडा,
जिन पनता रे मार ॥ मोरा० ॥
भापी रे सुन्दर गह परूपणा,
चरण करण नो रे जान ॥ मोरा ॥ मी ॥७
करिये भगति जुगति ए सूत्र नी,
निश्चय लहिये रे मुक्ति ॥ मोरा० ॥
जिनचन्द्र कहे प्रगटे एह थी,
आतम गुणनी रे शक्ति ॥ मोरा ॥मी ॥८

तृतीय स्थानाङ्ग सज्झाय

(राग– आठ टक कच्या जियारी०)

नीका अंग भला कर्या रे, जिनजी, नामें श्री ठाणाग
मोरो मन मगन थयो,हारे देखी देखी भाव । हारे नीर
नीर स्वभाव मारो मन मगन थयो ॥ १ ॥ टेर ॥

मयल जुगति करि आवतो रे जिनजी,
जीवाभिगम उपाग ॥ मो० ॥
एह अग मुझ मन वस्या रे जिनजी,
जिम कोकिल दल अब ॥ मा० ॥
गुहिर भाव करि गावतो रे जिनजी
आज तो गह आलाप ॥ मो० ॥ २ ॥
कूट शैल गिरग्गी [illegible]
कानन ने वलि कुण्ड [illegible]

गह्वर आकर द्रह नदी रे जिनजी,
नेह में अछे रे उदण्ड ॥ मो० ॥ ३ ॥
दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी,
गुण पर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥
परित्त जेह नी वाचना रे जिनजी,
संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥
वेढित श्लोक निर्युक्तिसु रे जिनजी,
संग्रहणी पडिवित्त ॥ मो० ॥
ए सहु संख्याता तिहाँ रे जिनजी,
सुणता उल्लसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥
श्रुतस्कन्ध इक राजतो रे जिनजी,
दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥
उद्देशादिक वीश छे रे जिनजी,
पद बहोत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥
राणी जिन शासन तणा रे जिनजी,
सुणे सिद्धान्त बखाण ॥ मो० ॥
विनयचन्द्र कहे ते सुने रे जिनजी,
परमारथ ना जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥

—चतुर्थ समवायाङ्ग सज्झाय—

(राग—थारा महलाँ ऊपर मेह०)

चोथो समवायाङ्ग, सुणो श्रोता गुणी हो लाल सुणो ॥
पन्नरणा उपाङ्ग, करी शोभा घणी हो लाल करी ॥

अर्ध मागधी भा
शारदा सुरतर्णी ह। लाल शारदा० ।
समकित भाव कुसु –
परिमल व्यापी ग्रमा न लाल परि० ॥ १ ॥
जीव अजीव ने जीवा –
जीव समास थी हो लाल जीव० ।
लहिए एह थी भाव,
विरोध कांई नथी हो लाल विरो ॥
भाँगा तीन स्वसमया—
लिङ्ग ना जाणिये हो लाल लिङ्ग० ।
लोक अलोक ने लोका—
लोक वखाणिये हो लाल अलो० ॥ २ ॥
एक थकी छे शत
समवाय प्ररूपणा हो लाल सम० ।
कोडा कोडी प्रमाण
जीव निरूपणा हो
बारह विह
तणी
शास्वत
छे एहना
गुणगन्ध
उद्देशादिक

सारथामें एक एक,
प्रत्येक गुण मिला हो लाल ग्रन्थ ॥
पद एक लाख चमाल—
महस तें उत्तराहो लाल सह० ।
पद ने अग्र उदग्र,
सख्याता अक्षरा हो लाल सख्या० ॥ ४ ॥
भाष्य चूर्णि निर्युक्ति,
करी सोहे सदा हो लाल करी० ।
सुणता भेद गम्भीर,
तृप्ति न होवे कदा हो लाल तृप्ति० ॥
जेह न माने अग के,
अन्तर गति हमी हो लाल अन्तर० ।
जल वरसन्ते जोर,
चुर्ण न होवे सुखी हो लाल ॥ ५ ॥
जाग्यो धर्म स्नेह,
जिणन्द शुं माहरो हो लाल जिणन्द ।
तजिया शास्त्र मिथ्यात्व
सूत्र जाएयो खरो हो लाल सूत्र० ॥
जिम मालती लहि भृङ्ग,
करीर नवि रहे हो लाल करीरे ।
ईश्वर गिर सरगङ्ग,
नवि ~ रहे हो लाल नवि० ॥६॥

॥ प्रवचन निर्ग्रन्थ
तणो जुगतें वदो हो लाल तणो ।
साकर मेलडी द्राख,
थकी पिण मीठडा हो लाल थकी० ॥
शु कहिये बहु बात,
जिनयचन्द्र इम कहे हो लाल जि० ॥
एहना सुणने सार,
श्रोता अति गह गह हो लाल श्रोता० ॥७॥

❀ पञ्चम भगवती सूत्र सज्झाय ❀

(राग पथीडा नी)

पचम अग भगवती जाणिये रे,
तिहाँ जिनवर ना वचन अथाह रे ।
हिमवन्त पर्वत सेती नीकल्यो रे,
मानू परतिख गङ्ग प्रवाह रे ॥ प० ॥ १ ॥
सुर पन्नत्ति नामे परगडो रे,
जेहनो छे उदाम उपग रे ।
सूत्र तणी रचना दरिया जिसी रे,
माहेला अर्थ ते मजल तरग रे ॥ प० ॥ २
इहा तो सुयखन्ध एक अति भलो रे
एक सो एक अध्ययन उदार रे ।
दस हजार उद्देशा जेहना रे,
तिहाँ कीना प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ प०॥

पद तो दोय लाख अरथे भर्या रे,
ऊपर सहस्स अठ्यासी जाण रे।
लोकालोक स्वरूप नी वर्णना रे,
विवाह पन्नत्ति अधिक प्रमाण रे॥ प० ॥ ४ ॥
करिये पूजा अने परभावना रे,
धरिये सद्‌गुरु ऊपर राग रे।
सुणिये सूत्र भगवती राग सूं रे,
तो होय भव सागर नो त्याग रे ॥प ॥५॥
गौतम नाम द्रव्य चढाइये रे,
सम्यग् ज्ञान उदय होय खेम रे।
कीजे साधु तथा साहमी तणी रे,
भगति जुगति मन आणी प्रेम रे ॥प०॥६॥
इण विधि सूं ए सूत्र आराधता रे,
इण भव सीझे वंछित काज रे।
पर भवे विनयचन्द्र कहे ते लहे रे,
मोहन मुगति पुरी ना राज रे ॥प ॥७॥

❀ षष्ठ ज्ञाता सूत्र सज्झाय ❀

(राग—किस लख लाया०)

छट्ठो अंग ते ज्ञाता सूत्र वखाणियेजी, जेहना छे अरथ अधिक उदंड हो म्हारा सुणजो धरि नेह सिद्धान्त नी वातडी जी।

श्रवणे सुणतां गाढो मन उपने जी,
मधुरता तर्जित जिम मधुखंड हो म्हा० ॥१॥
जम्बूद्वीप पन्नति उपाङ्ग छ जहनो रे,
इण माहे जिन पूजा नी विधि जोर हो।
अथरु सुणि परम शान्त रस अनुभवे जी,
चर्चा करे मम सोर हो ॥ म्हा० ॥२॥
नगर उधान चैत्य वनखण्ड साहामणा जी,
समवसरण राजा ना मात ने तात हो।
धर्माचारज धर्मकथा तिहाँ दाखवीजी,
इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥म्हा० ॥३॥
भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यदाजी
सूत्र परिग्रह बारू तप उपधान हो।
सलेहणा पच्चक्खाण् पादोपगमनता जी,
स्वर्ग गमन शुभ कुल उत्पत्ता न हो ॥ म्हा० ॥४॥
बोधिलाभ वलि तत न अन्त कृत्य कही जी,
धर्म कथा ना दोय श्रुतस्कन्ध हो।
पहिला ना उगणीस अध्ययन ते आज छे जी,
बीजा ना दस वर्ग महा श्रुतस्कन्ध हो ॥म्हा ॥५॥
ऊंठ कोडि तिहा सवल कथानक भाषियाजी,
भाख्या वलि, उगणीस उद्देशा हो।
सख्याता हजार भला पद परुना जी,
पढ़ थकी जाये कुमति कलेश हो ॥म्हा० ॥७॥

विनय करे जे गुरु नो बहु परेनी,
तेहने श्रुत सुणता बहु फल होय हो।
ते रसिया मन वसिया विनयचन्द्र ने जी,
मो माहे मिले जोया एक न टाय हो ॥म्हा०॥७॥

ॐ उपासक-दशा सूत्र सज्झाय ॐ

(राग—त्रिविया ना)

व सातमो अंग ने मोंसलो, उपासक दशा नामे चंग रे।
मणोपासकनी वर्णना, जसु चन्द पन्नति उपाग रे ॥१॥
न लागो मोरो सूत्र थी, एतो मन वैराग तरग रे।
रसु राता ज्ञाता गुण लहे,
परमारथ सुविहित सग रे ॥मन०॥२॥
ण अंगे सुयखन्ध एक छे, अध्ययन उद्देशा विचार रे।
दस दस सख्यायें दाखव्या,
पद पण सख्यात हजार रे ॥ मन०॥३॥
आनन्दादिक श्रावक तणो, सुणता अधिकार रसाल रे।
रस लागे आगे मोहनी,
श्रोता जन ने ततकाल रे ॥ मन०॥४॥
श्रोता आगल तो वाँचतों, गीतारथ पामे रीझ रे।
ज अर्द्धदग्ध समझे नहीं,
तेह सू तो कल्ली बीज रे ॥ मन०॥५॥
दस श्रावक ता इहा भाखिया, पिण सूत्र भण्या नहीं कोय रे।

ते माटे शुद्ध आदर भणी,
एह अरथ नी धारणा होय रे ॥ मन०॥६॥
साचो होय ते प्ररूपिये, नि शक पणे गुणगीम रे।
धनि जिनचन्द्र कहे शु थयो,
जो कुमति करमे रीस रे ॥ मन०॥७॥

❀ अन्तकृद् दशा-सूत्र-सज्झाय ❀

(राग—वीर वखाणी राणी चेलणा जी)

आठमो अंग अन्तगड दशा जी,
सुणि करो मन पवित्र ।
अंतगड केवली जे थया जी,
तहना छे आठ चरित्र ॥ आ०॥१॥
कम कठिन दल चूरता जी,
पूरता जगत नी आश
जिनवर देव इहा भाषता जी,
सामता अर्थ शुचिलास ॥ आ० ॥ २ ॥
सकल निक्षेप नय भंग थी जी,
अगना भाव अभंग ।
सहज सुगरंग नी तल्पिका जी,
कल्पिका नाम उमंग ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥
एह सुयखन्ध इण अगना जी,
वर्ग छे आठ अभिराम ।

आठ उद् गा छे नली जी,
मख्याता महस पद ठाम ॥ आ० ॥ ४ ॥
आठमा अगना पाठ म जी,
एहवो अछे र मीठाश ।
सरम अनुभव रम उपन जी,
मम्पज्ञ पुण्य नी राश ॥ आ० ॥ ५ ॥
विषय लम्पट नर ज हुवे जी,
निरविषयी सुण्या थाय ।
जिम महाविष विषधर तणो जी,
नाग मन्त्र सुण्या जाय ॥ आ० ॥ ६ ॥
अमृत वचन मुख वरसती जी,
सरस्वती करो र पसाय ।
जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी,
तुरत लहे अभिप्राय ॥ आ० ॥ ७ ॥

❀ अनुत्तरोपपातिकदशा-सूत्र-सज्झाय ❀

(राग—नणदल बिन्दली ले)

नवमो अग अणुत्तरोववाई, एहनी रुचि मुझने आई हो
श्रावक सूत्र सुणो ॥ टेर ॥
सूत्र सुणो हित आणी,
ए तो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० ॥ १ ॥
नमु कल्पावतसिका नामे
सोहे उपाग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥

एतो आगम ने अनुकूला,
मानु मेरुशिखर नी चूला हो ॥ आ०॥२॥
एतो सूत्र नो नाम सुणीजे,
तिम तिम अन्तरगति भींजे हो ॥ आ०॥
प्रकटे नवल सनेहा,
एह थी उलसे मोरी देहा हो ॥आ०॥३॥
अनुत्तर सुरपद पाया,
तेहना गुण इण में गाया हो ॥ आ०॥
नगरादिक मान बखाण्या
ते तो छट्ठे अंगे आण्या हो ॥ आ०॥४॥
इहां एक सुयखन्ध चारू,
त्रण वर्ग वलि मनोहारू हो ॥ आ०॥
उद्देशा त्रण सनूरा,
सख्यात सहस पद पूरा हो ॥ आ०॥५॥
सूत्र सुणाऊँ अमे तेहन,
साँची श्रद्धा हुवे जेहने हो ॥ आ० ॥
आतार्थी प्रीत लगाऊँ,
निन्दक ने सुख न लगाऊँ हो ॥आ०॥६॥
जह सुणता करे बकोर,
ते तो मारुम नहीं पिशु ढोर हो ॥ आ०॥
कवि विनयचन्द्र कहे साँचो,
श्रुतरङ्गे सहु को राचो हो ॥ आ०॥७॥

❀ प्रश्न व्याकरण सूत्र सज्झाय ❀

(राग—आ ग आम पधारो पूज०)

आवो आवो गुणना जाण, तमने सूत्र सुणाऊँ ॥ टेर ॥
दशमा अङ्ग सुरङ्ग सुहावे, प्रश्न व्याकरण नामे ।
सूत्र कल्पतरु सद्य ते तो, चिदानन्द फल पावे ॥आ०॥१॥
पुष्पकली ज्यू परिमल महक गुरु पराग ने रागे ।
तिम उपाङ्ग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जाग ॥आ०॥२॥
अङ्गुष्ठादिक जिहाँ प्रकाश्या, प्रश्नाश्रिक अति रूडा ।
ते छे अठोत्तरशत एतो, सूत्र मध्य मणि चूडा ॥आ०॥३॥
आश्रवद्वार पाच इहाँ आख्या पाच संवर द्वार ।
महामन्त्र वाणी मा लहिये, लब्धि भेद सुखकार ॥आ०॥४॥
सुयखन्ध एक छे दशम अंगे, पणयालीस अज्झयणा ।
पणयालीस उद्देश वलिपद, सहस संख्यातनी रयणा ॥आ०॥५।
जे नर सूत्र सुणे नहीं माने, केवल पोषे काया ।
माया माहीं रहे लपटाणा ते नर इमहिज आया ॥आ०॥६॥
सूत्र माहि तो भारग दोय छे, निश्चय नय व्यवहारा ।
विनयचन्द्र कहे ते आदरिये, तज भव मदन विकारा ॥आ०॥७।

❀ विपाक सूत्र सज्झाय ❀

(राग—कड़खानी)

सुणो र विपाक श्रुत सूत्र इग्यारमो,
तजो विकथा वृथा जे अनेरी,

ललित उपाङ्ग जसु भ्रमर पुष्पचलिका,
मूलिका पाप आनन्द करी ॥ सुणो०॥१॥
अशुभ विपाक सम दुष्कृत फल मागवी,
नरक मां गरक थया जह प्राणी ।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग मां न गया,
ताम उत्तरध्यता इहां आणी ॥ सुणो०॥२॥
दाय श्रुतस्कन्ध ने वीश अध्ययन वलि,
वीश उद्देश इहां जिन प्रयुक्त ।
महम मरणात प्र जन्म मचकुन्द जिम,
बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुन्थे ॥ सुणो०॥३॥
मरम चम्पकलता सुरभि मह ने रचे,
अन्य उपकार नी बुद्धि माटे ।
स्व उपकार तह थी सकल जाणिये,
जेह थी पुण्य सुख अचल म्हाटे ॥ सुणो०॥४॥
बन्ध ने मोक्ष मां हेतु कारण अछ
दुष्कृत ने सुकृत नाना विचारी ।
दुष्कृत न परिहरी सुकृत ने आदरी,
जिन वचन धारिये गुण सँभारी ॥ सुणो ॥५॥
मकर र मकर निन्दा निगुण करी
नारकी तणी गति काँइ जाय ।
नारकी प्रकृति तज महत सन्ताप मन
लाभ धन मामलो परम पाय ॥ सुणो०॥६॥

सुख ने दुख विपाक फल दाखव्या,
अंग इग्यारमे वीतरागे ।
चिर जयो वीर शासन जिहाँ सूत्र थी,
रवि विनयचन्द्र गुण ज्योति जागे ॥ सुणो०॥७॥

❀ कलश ❀

(राग नगारा रा)

अंग इग्यारह मैं गुण्या सहेलडी ए,
आज थयो रंग रोल के ।
नन्दी सूत्र माहि पहनी महेलडी ए,
भाख्यो मन निचोल के ॥१॥
आज वधामणा ॥ टेर ॥
पसरी अंग इग्यारनी महेलडी ए, मुझ मन मण्डप वेल के ।
सींचूं त हरषे करी महेलडी ए,
अनुभव रस नी रेल के ॥ महेल०॥२॥
इत धर्गी जे साँभले सहेलडी ए, कुण कुण कुण साल के ।
तो तेह फल लहे फूठरा सहेलडी ए
स्वादें अति ही रसाल के ॥ म०॥३॥
हर्ष अपार धरी हिय महेलडी ए, अहमदाबाद मझार के ।
भाम करी एह अंगनी महेलडी ए,
वरत्या जय जयकार के ॥ स०॥४॥
संवत् सतरह ... सहेलडी ए, वर्षा ऋतु नभ मास

पञ्चमी दिन सुदि पख मा सहेलड़ी ए
पूरण थई मन आश रे ॥ आ०॥५॥
श्री जिन धर्म सूरि पाटवी सहेलड़ी ए, श्री जिनचन्द्र सूरीश रे ।
खरतर गच्छना राजिया सहेलड़ी ए
तसु राज्ये सुजगीस रे ॥ स०॥६॥
पाठक हर्ष निधान जी, सहेलड़ी ए, ज्ञान तिलक सुपसाय रे ।
विनयचन्द्र कहे मैं करी सहेलड़ी ए,
अंग इग्यारे सज्झाय रे ॥ स०॥ ७॥

॥ इति श्री एकादशाङ्ग सज्झाय ॥

ज्ञान पद चैत्यवन्दन स्तवनादि

चैत्यवन्दन—१

(हरिगीतिका छन्द)

ज्योति स्वरूप अनूप भव गुण भूप शिव सुखदायकम्,
हृदयान्धकार निकार वारण पुण्य-कारण नायकम् ।
मति आदि पंचप्रकार भर परपंच दूर निवारकं,
ज्ञान सदा वन्दे विनययुत, नयप्रमाण सुधारकम् ॥१॥
गुरुदेव दिव्य दया प्रधान प्रसाद से जो होत है,
सब लोक और अलोक में जिसका महा उद्योत है ।
जो एक और अनेक रूप विवेक वर विस्तारकं,
सदा वन्दे विनययुत नयप्रमाण सुधारकम् ॥२॥

सुखसागर भगवानुपदनी परम पावन लायक
शुभ पचमी व्रत साधना में शुद्ध बुद्धि विधायकम् ।
नत हरि कवीन्द्र सुकीर्तित अति भीम भव भयहारक
ज्ञान मम वन्दे विनययुत नय प्रमाण सुधारकम् ॥३॥

चैत्यवन्दन—२

त्रिगडे बैठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ।
त्रिकरण सु त्रिहुलोक जन, निसुणो मन रागे ॥
आराधो भली भाँति सु पाचम अजुवाली ।
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ।
ज्ञान आराधन थी लह्यु शिवपद सुख श्रीकार ॥१॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काम कुसुम उपमान ।
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक प्रधान ॥
ज्ञानी श्वासोच्छ्वास में, करे कर्म नो छेह ।
पूर्व कोडी वरषा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ।
ज्ञान तणो महिमा घणो अंग पाँचमें भगवान ॥२॥
पचमास लघु पचमी, जावजीव उत्कृष्टी ।
पच वरष पाच मासनी पचमी करो शुभ दृष्टि ॥
एकावन वलि पचना, काउसग्ग लोगस्स केरा ।
उजमणो करो भावसु, टालो भव फेरा ॥

इण पर पंचमी आराधिये, आणी भाव अपार।
वरदत्त गुण मंजरी परे, रंग विनय लहो सार ॥३॥

❀ श्री ज्ञान पंचमी स्तुति ❀

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

पंचानन्तक-सुप्रपञ्च परमानन्द-प्रदान-क्षम
पञ्चानुत्तरसीमदिव्यपदवी वश्याय मन्त्रोत्तमम्।
येन प्राञ्जल-पञ्चमी-वरतपो व्याहारि वरकारिणा,
श्री पञ्चाननलाञ्छन भवतुतां श्रीवर्द्धमान श्रियम् ॥१॥

ये पञ्चाश्रवरोध-साधनपरा पञ्चप्रमादीहरा
पञ्चाणुव्रत पञ्चसुव्रतविधिप्रज्ञापना-सादरा।
कृत्वा पञ्चहृषीक निर्जयमथा प्राप्तागतिं पञ्चमी,
तस्मी सन्तु सुपञ्चमीमहभृता तीर्थङ्करा शङ्कराः ॥२॥

पञ्चाचार-धुरीण पञ्चमगणाधीशेन संसूत्रितं,
पञ्चज्ञान विचार सार कलितं पञ्चेषु-पञ्चत्वदम्।
दीपाभं गुरु पञ्चमारतिमिरष्वेषादशी-रोहिणी—
पञ्चम्यादिफल-प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥३॥

पञ्चानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्री पञ्चमस्य श्रिया,
भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पञ्चदिव्यं व्यधात्।
श्राद्धे पञ्चजने मनोमत-कर्तां स्वारत्न पञ्चालिका,
पञ्चम्यादितपोरता भवतु सा सिद्धायिका नायिका ॥४॥

२

पञ्च अनन्त महन्त गुणाकर पञ्चमी गतिदातार,
उत्तम पञ्चमी तप विधि दायक ज्ञायक भाव अपार।
श्रीपञ्चानन लाञ्छन लाञ्छित वाञ्छित दान सुदक्ष,
श्री वर्द्धमान जिनन्द मुनन्दो आनन्दो भवि पक्ष ॥१॥
पूरण पञ्च महासरोवर गोधर भव्य उदार,
पञ्च अणुव्रत पञ्च महाव्रत विधि विस्तारक सार।
जे पञ्चेन्द्रिय दमि शिव पहोता ते सघला जिनराय,
पञ्चमी तप धर भवियण उपर सुथिर करो सुपसाय ॥२॥
पञ्चाचार धुरन्धर गुणधर पञ्चम गणधर वाण,
पञ्चज्ञान विचार विराजित भाजित मद पञ्चबाण।
पञ्चमकाल तिमिर भर माहे दीपक सम मोहन्त,
पञ्चमी तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिन सिद्धान्त ॥३॥
पञ्च परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जो नरनार,
वलि निर्मल पञ्चमी तपधारक तेह भणी सुविचार।
श्री सिद्धायिकादेवी अहोनिशि आपो सुख अमन्द,
श्री जिनलाभ सूरीन्द पसाय कहे जिनचन्द मुणिन्द ॥ ४ ॥

स्तवन

(राग—सजनी)

मङ्गल मनोरथ पूरवे, पञ्चम सुमति जिनन्द । हे सजनी !
पाय [illegible] जिनवर तणा,
[illegible] धरि परमानन्द । हे सजनी ॥

ज्ञान वडो संसार में, ज्ञाने शिवसुख होय हे ।। सजनी ।।
इह भव पर भव परगडो,
ज्ञान तणो उपगार हे । सजनी ।। २ ।।
उज्ज्वल ज्ञान पंचमी तणी, विधि करवानी नेह हे । सजनी ।
विविध पर विधि जोइने,
कहिस्युं सघली नेह हे ।। स० ।। ३ ।।
पंच प्रमादवशे करी, कीधी धर्म नी कोड हे सजनी ।
जग में व्यापार ज्ञान थी,
दुःख करे ज्ञान नी होड हे ।। स०।। ४ ।।
पहिलो मतिज्ञान जाणिये, तास अट्ठाईस भेद हे ।।सजनी।।
चवदह भेद श्रुतज्ञानना,
अवधि तणा छह भेद हे ।। सजनी ।।५।।
भेद दोय मन नाण ना, केवल केवल एक हे । सजनी ।।
जाणे पञ्चम नाण थी
लोका लोक विवेक हे ।। स० ।। ६ ।।
भव भव भमतों जीवड़ नाण विराध्यो होय हे ।। स०।।
पञ्चमी तप प्रभाव सुं,
कर्म खपावे सोय हे ।।स० ।। ७ ।।
पंचमी तप करवा तणी, विधि कही शास्त्र मझार हे ।स०।
पाच वरष ने ऊपर,
मास पाँच अवधार हे ।। स० ।। ८ ।।
जघन्य विधि जावजीव नी करे मास उपवास हे ।।स०।।

तीजी तिथि ए जाणजो
पमणी श्रुत अनुसार हे ॥ म ॥ ९ ॥

कार्ती सुदि पंचमी सदा, वर एक उपवास हे ॥ म ॥
यावज्जीव करनो सही
आणी अधिक उल्लास हे ॥ म० ॥ १० ॥

चौथी तिथि पच मासनी लघु पंचमी होय हे ॥ म० ॥
इम वर उपवास से,
सगति अपनी जोय हे ॥ स० ॥ ११ ॥

एकामना सुँ कीजिये, नीती सुँ निरधार हे ॥ म० ॥
आँबिल सु आराधिये,
पञ्चमी ए सुखकार हे ॥ स० ॥ १२ ॥

तप करि ऊजमणो करु, शक्ति तणे अनुसार हे ॥ म० ॥
शक्ति बिना दुगुणो कह्यो,
करजो तप निरधार हे ॥ म० ॥ १३ ॥

शुभ तिथि शुभवार लीजिये, उज्ज्वल पच अति सार हे ॥ म० ॥
चैत्र पोष मल टालिये,
सूत्र अरथ मनुहार हे ॥ म० ॥ १४ ॥

मिगसर माघ फागुण भलो, जेठ आषाढ़ वैशाख हे ॥ म० ॥
इण षट् मासे लीजिये,
ऐई शास्त्र नी साख हे ॥ स० ॥ १५ ॥

✿ पञ्चमी लघु-स्तवन ✿

पञ्चमी तप तुम करो रे प्राणी,
निर्मल पामो ज्ञान रे।
पहली ज्ञान ने पछे किरिया
नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ प० ॥ १ ॥

नन्दी सूत्र में ज्ञान वखाण्यो
ज्ञान ना पंच प्रकार रे।
मति श्रुत अवधि अने मनपर्यव,
केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ प० ॥ २ ॥

मति अट्ठावीस श्रुत चउदह वीस,
अवधि छः असंख्य प्रकार रे।
दोय भेद मनपर्यव दाख्यो,
केवल एक प्रकार रे ॥ प० ॥ ३ ॥

चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा,
तेहनु तेज आकाश रे।
केवल ज्ञान समो नहीं कोई,
लोकालोक प्रकाश रे ॥ प० ॥ ४ ॥

पारसनाथ प्रसाद करीने,
म्हारी पूरो उमेद रे।
'समय सुन्दर' कहे हूँ पिण पामू,
ज्ञान नो पंचमो भेद रे ॥ प० ॥ ५ ॥

❀ श्रुत-स्तवन ❀

(राग मुगो चन्दाजा)

श्रुत अति ही भलो, सुघ मंगल आधार
नमूं त्रिभुवन तिलो ॥ टेर ॥
अरथे श्री वीर जिनन्द भाख्यो, सूत्रे श्रीगणधर गुरु भाख्यो,
तदभव थी ज मुनिवर राख्यो ॥ श्रुत० ॥ १ ॥
जेहथी जगमाज मंगल जाणे,नय एकांत मुनिमन नवि ताणे,
निश्चय व्यवहार ते मन आणे ॥ श्रुत ॥ २ ॥
जिहाँ अंग उपांग छे अति रूड़ा, छह छंद पयन्ना नहि कुड़ा,
मूल सूत्र नन्दी अनुयोग चूड़ा ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥
तिहां नियुक्ति सूत्रे भंगी, वलिभाष्य चूर्णि टीका चंगी,
पंचम अंगे कही पंचाङ्गी ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥
जिहां साधु श्रावक मारग लहिये,सवेगपखी वलि मारग कहिये,
ए त्रण विन भव मारग वहिये ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥
जेहनी अनुपेहा नित करिये, उपचारे दूषण परिहरियें,
आराध्या निज अनुभव वरियें ॥ श्रुत ॥ ६ ॥
जिन आगमना जे गुण गावे शुद्धाशय जे मन माँ ध्यावे,
ते 'समाकल्याण' सदा पावे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

❀ ज्ञान पद-स्तवन ❀

(राग आसौ प्रणाम)

परम ज्ञान गुण ज्योति जग में जय जय हो
थारे शुभ गुण ज्ञान सुजस तर निर्मय हो ॥ टेर ॥

ज्ञानी मना ज्ञान उपावे, आतम परमातम पद पावे,
भव दास दूर भगावे जग में जय, जय हो ॥ परम०॥१॥
ज्ञान पंचमी जय जयकारी, शुद्धबुद्धि सेवे नरनारी
हरि कवीन्द्र बलिहारी, जग में जय जय हो ॥ परम ॥२॥

❋ ज्ञान पद ❋

(राग—चल उड़ जा रे पंछी अब ये देश हुआ बेगाना)

है जग में ज्ञान महान, मंगल सुखखान हमें वह सुहावे।
हम दिव्य ज्ञान को चहावें ॥ टेर ॥
हित अहित ज्ञान से ही जाने, बिन तत्त्व ज्ञान कोई क्या जाने,
है ज्ञान की महिमा अतुल या शास्त्र बतावें ॥ हम० ॥१॥
तप कितना ही कोई क्या न करे, नहा ज्ञान रहित वह सिद्धि वरे,
वेद पुरान कुरान औ जिनमत यों फरमावे ॥ हम०॥२॥
बिन आतम ज्ञान नहीं क्रिया फले, बिन शुद्ध ज्ञान नहीं प्रभु मिले
आओ मंगल ज्ञान भक्ति से ज्ञान को पावें ॥हम ॥३॥

❋ ज्ञान का उजियाला ❋

(राग—प्रेम अपूरब माया जगत में)

ज्ञान से है उजियाला जीवन में ज्ञान से ॥ टेर ॥
ज्ञान विश्वगत वस्तु दिखाता, ज्ञान ही है कर्तव्य सिखाता,
चतुश्चद ज्ञान की शाला जीवन में ॥१॥
आतमरूप का दर्शन जब हो, ज्ञान कुञ्जी हाथ में जब हो,
खुल जाये मन का ताला जीवन में ॥२॥

ज्ञान से सञ्चित कर्म हटावे, ज्ञान भविष्य का बन्ध मिटावे,
कट जाये कर्म का जाला जीवन में० ॥ ३ ॥
मिश्री से भी ज्ञान मधुर है, श्रीखंड से भी अधिक रुचिर है,
ज्ञान है सरस रसाला जीवन में० ॥ ४ ॥
ज्ञान ही निर्मल गङ्ग सलिल है, ज्ञान ही सुखकर मलयानिल है,
ज्ञान है अमृत प्याला जीवन में० ॥ ५ ॥
अनुपम आनन्द भरती मन में, ज्ञान भानु की ज्योति जीवन में,
कर देती है उजियाला जीवन में० ॥ ६ ॥
शुद्धोपयोग में ध्यान लगावे, ज्ञान ही मोह निद्रा से जगावे,
सज्जन को सुख देने वाला जीवन में० ॥ ७ ॥

❀ ज्ञान का महत्त्व ❀

(राग- प्रेम अपूरब माया जगत में०)

ज्ञान बिना अंधियारा जीवन में ज्ञान बिना० ॥ टेर ॥
ज्ञान बिना नर कुछ नहीं जाने, भला बुरा कुछ नहीं पहिचाने,
जैसे पशु बेचारा जीवन में० ॥ १ ॥
कृत्याकृत्य को ज्ञान बतावे दुष्पथ सत्पथ ज्ञान दिखावे,
ज्ञान से जानत सारा जीवन में० ॥ २ ॥
अविद्यातम जब छाया हो, समझ में जब कुछ नहीं आया हो,
ज्ञान दीपक ही सहारा जीवन में० ॥ ३ ॥
जीवन नैया भव सागर में, भटक रही हो उस अवसर में,
ज्ञान दिखाता किनारा जीवन में ॥ ४ ॥

मन स्याय आदि ज्ञा ,मात ,निरा वहि ज्वाला को बुभाती,
नानाान जगराग जीवन म० ॥ ५ ॥
ज्ञान बिना चारित्र निष्फल है ज्ञान बिना तप जप निष्फल है,
ज्ञान ग नमन प्रााग जीवन मे० ॥ ६ ॥
पन्नान प ज्ञा म पाव, शुभ उपयोग में ज्ञान रमावे,
'मन्नन' जन मन प्यारा जीवन म० ॥ ७ ॥

❀ ज्ञान पचमी की सज्झाय ❀

(तर्ज—महावीर तुम्हारा मन्दिर सुहा०)

भविजन जिन मङ्गलकारी, सदा ज्ञान सभी में सार ॥ टेर ॥
बिन ज्ञान जगत अँधियारा, भटकत नहीं आवत पारा,
दुख दुर्गति हान अपारा,
कहत ज्ञान सकल सुखकार ॥ भ० ॥ १ ॥
नहीं दया ज्ञान बिन होती, बिन दया मुक्ति नहीं होती,
है ज्ञान जगत में ज्योती,
कहते जिन आगम निधार ॥ भ० ॥ २ ॥
ज्ञानावरणीय विनाश, क्षय उपशम भाव विलासे,
निर्मलतर ज्ञान प्रकाशे,
लोकालोक विलोकनहार ॥ भ० ॥ ३ ॥
मति आदिक पंच प्रकारा एकावन भेद उदार
है एक अनेक विचारा,
उत्तम स्याद्वाद अधिकार ॥ भ० ॥ ४

ज्ञानगुण ज्ञान अजाना, गुण सागर मय भगवाना, मतिश्रानन्द खजाना,

देता निरुपम पद अविकार ॥ म० ॥ ५ ॥

ज्ञानाराधक नरनारी, गुरु आज्ञा के अनुसारी, शुभ ज्ञान पंचमी धारी,

करना सुव्रत विधि विस्तार ॥ म० ॥ ६ ॥

सुरगणनायक हरि सेवा, ज्ञानोदय पाय मेवा, मुनीन्द्र कहें स्वयमेवा,

वाणी ज्ञान की जय जयकार ॥ म० ॥ ७ ॥

® उद्यापनादि-विधि ®

अष्टाह्निका उत्सव पूर्वक उद्यापन कर मन्दिर में निम्नलिखित वस्तुएँ चढ़ावें उत्कृष्ट से जिन मन्दिर अथवा ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय वाचनालय विद्यालय आदि स्थापित करें करावें इनमें सहायता देवें । ज्ञान भक्ति करने से ज्ञान पढ़ाने में यथाशक्ति सहायता देने से ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

दर्शनोपकरण.—

देरासर, जिनबिम्ब, आंगी, तिलक, मुकुट, छत्र, चामर, सिंहासन, भामण्डल ध्वजा आदि तथा पूजा के उपकरण कलश थाली रकेबी कटोरिया स्नान कूँची अंग लूहना धूपदानी केशर चन्दन कपूर बरास आदि । जघन्य ? उत्कृष्ट ” ” ” २५

ज्ञानोपकरण —

ज्ञापनागार आगम शास्त्र ग्रन्थ पुस्तकें पूठे पाटी स्लेट दवात कलम ठवणी पुस्तक बन्धन की चौकी रीलें (मापना–मापडी) नवकरा (स्लेट पेंसिल) पेंसिल वासक्षेप फाउन्टेन पेन आदि। जघन्य ५ उत्कृष्ट ५ वा २५

चारित्रोपकरण.—

कम्बल कांबली चद्दरें चोलपट्टे आसन संथारिया ओघा (रजोहरण) दाडी दण्डे ज्वडासन पूंजनी पातरे तरपणी आदि चरवला मुहपत्ती आसन चरवला की डाडी आदि।

उपरोक्त दर्शनोपकरण, ज्ञानोपकरण व चारित्रोपकरण की वस्तुएँ यथा शक्ति क्रमशः मन्दिर जी, ज्ञान मन्दिर व पाठशाला, साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविका को वितरण करे। विशेष जानकारी के लिये गुरुजनों से पूछना उचित है, यहां पर तो संक्षेप से बतलाया है।

❀ सर्व तपस्या ग्रहण विधि ❀

शुभ दिन सुमुहूर्त में वस्त्राभूषण से सुसज्जित हो अक्षत श्रीफल यथाशक्ति-सोना-रूपा नाणों लेकर परमेष्ठि ध्यान पूर्वक गुरु के पास पहुंच द्वादशावर्त्त वंदन कर ज्ञान पूजा वासक्षेप से एवं नाणा चढ़ाकर कर। इरियावहीया तस्स उत्तरी अन्नत्थ बोलकर एक लोगस्स व

काउसग्ग करे। पार कर प्रगट लोगस्स कहे। बैठ कर
घुटना घुटना के बीच हाथ रखकर मुहपत्ती पडिलेहन करे।
द्वादशावर्त्त वान्दणा-देवे। बाद खमासमण दे—अमुक तप
आराधनार्थ चैत्य वंदाउं-कह कर चैत्यवन्दन करे-नमोत्थुणं
अरिहंत चेइयाणं अन्नत्थ एक नवकार का काउसग्ग-पारकर
एक थुई कहे। बाद लोगस्स सव्वलोए अन्नत्थ-एक नवकार
काउस्सग्ग-पार दूसरी थुई। फिर पुक्खरवर दीवड्ढे-सुअस्स
भगवओ-अन्नत्थ-एक नवकार काउसग्ग पार तीसरी थुई।
सिद्धाणं बुद्धाणं वेयावच्च-अन्नत्थ एक नवकार काउसग्ग
चौथी थुई कह नीचा बैठे। णमोत्थुणं कहे खड़ा हो—
शान्तिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि का सग्ग-अन्नत्थ
एक लोगस्स काउसग्ग करे पार कर-नमोर्हत् कह—

श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्ति-विधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये॥

थुई कह शान्ति देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्ग—
अन्नत्थ-एक नवकार काउसग्ग पार कर—

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे॥

थुई कह-श्रुत देवता क्षेत्र देवता भुवन देवता का काउसग्ग
एक २ नवकार का करे अन्नत्थ कह कर-य थुइया बोले-

सुवर्ण-शालिनी देयाद् द्वादशांगी जिनोद्भवा।
श्रुत देवी सदा मह्य-मशेष-श्रुत-सम्पदम्॥१॥

ज्ञानोपकरण —

स्थापनाचार्य आगम शास्त्र ग्रन्थ पुस्तकें पूठे पाटी स्लेट दवात कलम ठवणी पुस्तक रखने की चौकी शीलें (सापडा-सापडी) बतरखा (स्लेट-पेंसिल) पेंसिल वासक्षेप होल्डर पेन आदि। जघन्य १ उत्कृष्ट ५ वा २५

चारित्रोपकरण —

कम्बल ऑवली चद्दरें चोलपट्टे आसन सथारिया ओघा (रजोहरण) डाडी दण्ड दण्डासन पूंजनी पातरे तरपणी आदि चरवला मुहपत्ती आसन चरवला की डाडी आदि।

उपरोक्त दर्शनोपकरण, ज्ञानोपकरण व चारित्रोपकरण की वस्तुएँ यथा शक्ति क्रमशः मन्दिर जी, ज्ञान मन्दिर व पाठशाला, साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविका में वितरण करें। विशेष जानकारी के लिये गुरुजनों से पूछना उचित है, यहां पर तो संक्षेप से बतलाया है।

❀ सर्व तपस्या ग्रहण विधि ❀

शुभ दिन शुभमुहूर्त मे वस्त्राभूषण से सुसज्जित हो अक्षत श्रीफल यथाशक्ति-सोना-रूपा नाणो लेकर परमेष्ठी ध्यान पूर्वक गुरु के पास पहुंच द्वादशावर्त्त वंदन कर ज्ञान पूजा वासक्षेप से एवं नाणा चढ़ाकर करें। इरियावहीया तस्स उत्तरी अन्नत्थ बोलकर एक लोगस्स का

...स्सग करे। पार कर प्रगट लोगस्स कहे। फिर ...
... घुटनों के बीच हाथ रखकर मुहपत्ती पडिलेहन करे।
...र खमासणा देवे। बाद खमासमण दे—अमुक ...
... चैत्य वंदन करूं-कह-कर चैत्यवन्दन कर-नमोत्थुणं
...हंत चेइयाणं अन्नत्थ एक नवकार का काउस्सग्ग-पारकर
... कहे। बाद लोगस्स ... अन्नत्थ एक नवकार
...स्सग्ग-पार दूसरी थुई। फिर पुक्खरवर दीवड्ढे-सुअस्स
...ओ-अन्नत्थ-एक नवकार काउस्सग्ग पार तीसरी थु...
...ाणं बुद्धाणं-वेयावच्च-अन्नत्थ एक नवकार का...
...थी थुई कह नीचा बैठे। णमोत्थुणं कहे ...
...नाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि ...
... लोगस्स काउस्सग्ग करे पार कर-नमोऽर्हत् ...
श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्ति विधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥
...ह शान्ति देवता आराधनार्थं करेमि ...
...त्थ-एक नवकार काउस्सग्ग पार कर...
...ान्ति शान्तिकर श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे ...
...ान्ति रेव सदा तेषां, येषां शान्ति गृहे ...
... श्रुत देवता क्षेत्र देवता ...
... २ नवकार का करे अन्नत्थ ...
... सुवर्ण-शालिनी देयाद् द्वादशांगी ...
श्रुत देवी सदा मह्य-मशेष-श्रुत ...
... ॥१॥

यामा चेत्र गता मन्नि-मातर आगमाल्य ।
जिनाला साधयन्तस्ता-न्तनु चेत्र-देवता ॥२॥
चतुर्वर्णाय सवाय-स्त्री भवनवासनी ।
निहत्य दुरिता यपा-करोतु सुखमक्षयम् ॥३॥

बाद शासन देवता आराधनार्थ करेमि काउसग्गं । अन्नत्थ नवकार—

यापाति शासन जैन सद्य प्रत्यूह नाशिनी ।
साभिप्रेत समृद्धयर्थं भूयाच्छासन-देवता ।

यह कह समस्त वैयावृत्यकर आराधनार्थ करेमि काउसग्ग-एक नवकार—

श्री शक्र प्रमुखा यक्षा । जिनशासन संस्थिता ।
देवान्यस्तदन्येऽपि संघ रक्षन्तपायत ।

यह कह नीचा बैठे-नमोत्थुणं जावंति, जावंत नमोर्हत् उवसग्गहरं-जयवीयराय तक चैत्यवन्दन करे। खमासमण देवे-इच्छा कारेण संदिसह भगवन् अमुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्ग एक लोगस्स का काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहे। तीन नवकार गिन खमासमण दे इच्छाकारेण संदिसह भगवन्— अमुक तप गहण दंडक उच्चरावोजी गुरु यह उचरावेसो—

अहं णं भंते तुम्हाणं समीवे अमुक तव उवसं पज्जिवाणं विहरामि तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओ णं अमुक तव । खित्तओ णं इत्यवा

अन्नत्थणा। कालओ णं, जाव परिमाणं। भावओ णं जाव गहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि सन्निवाएण न भविज्जामि जाव अन्नेण व केणइ रोगायंकाइ परिणाम वसेण एसो मे परिणामो न पडिवज्जइ ताव मे एस तओ अन्नत्थ रायाभियोगेण गणाभियोगेण बलाभियोगेण देवाभियोगेण गुरुनिग्गहेणं वित्तीकन्तारेणं अन्नत्थणाभोगेण सहस्सागारेण महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

जो तप करे उसका नाम-समय निर्द्धारित कर तीन वार बोले। गुरु-अंचेणं सुत्तेणं, अत्थेणं तदुभयेणं, सम्मं धारणिज्ज चिरं पालणिज्ज गुरु गुणेहिं वड्ढाहि। नित्थारग पारगो होहि।

बाद खमासमण दे गुरु मुख से पचक्खाण करे।

❁ सर्व तप-पारण-विधि ❁

ज्ञान पूजा करे। इरियावही पडिक्कमे। अमुक तप पारवा मुहपत्ती पडिलेहूँ ? कह पडिलेहे। २ वादना देवे इच्छाकारेण स० भगवन्-तुम्हे अम्हं अमुक तप पारेह गुरु पारावेमो। खमासमण दे। इच्छा० स० भ० अमुकतप निक्खेवणत्थं काउसग्ग करावेह। गुरु ... । ऊपर की विधि से देव वन्दन करे ... कारेमि काउसग्गं अन्नत्थ एक

काउस्सग्ग स्तुति-नमोत्थुणं-खमासमणा—भगवन् अमुक तप करते अविधि आशातना दोष लगा हो तो मन वचन काया से करी मिच्छामि दुक्कड । ज्ञान भक्ति द्रव्य में भाव से करा हो सो फलदायक हो जो । गुरु-निश्राय पारणा होउ । पीछे पच्चक्खाण करे । अमुक तप आलोयणा निमित्त करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थ-४ लोगस्स का काउस्सग्ग । प्रकट लोगस्स पीछे साधुकी साधर्मी की भक्ति करे । उजमणा करे । ज्ञान-दर्शन चारित्र की वृद्धि करें । इत्यलं विस्तरेण ।

इति खरतरगच्छीय आर्या शिरोमणि प्रवर्तिनी
श्रीमती ज्ञानश्रीजी महाराज शिष्या सज्जनश्री
संगृहीता ज्ञान पंचमी
सुगम विधि समाप्ता



काउस्सग्ग स्तुति-नमोत्थुणं-खमासमण—भगवन् अमुक तप करते अविधि आशातना दोष लगा हो तो मन वचन काया से करी मिच्छामि दुक्कड । ज्ञान भक्ति द्रव्य से भाव से करी हो सो फलदायक हो जो । गुरु-नित्थार पारगा होउ । पीछे पचक्खाण करे । अमुक तप आलोयणा निमित्त करेमि काउस्सग्ग-अन्नत्थ-४ लोगस्स का काउस्सग्ग । प्रकट लोगस्स पीछे साधुजी साधर्मी की भक्ति करे । उजमणा करे । ज्ञान-दर्शन चारित्र की वृद्धि करें । इत्यलं विस्तरेण ।

इति खरतरगच्छ आर्या शिरोमणि प्रवर्तिनी
श्रीमती ज्ञानश्रीजी महाराज शिष्या सज्जनश्री
संग्रहीता ज्ञान पंचमी
व्रत विधि समाप्त

